

गीतांजलि श्री के उपन्यासों में आधुनिक स्त्री का चित्रण

सोनू निठारवाल,

रिसर्च स्कालर,

श्याम यूनिवर्सिटी, दौसा (राज)

डॉ. उमरानी दुबे,

रिसर्च सुपरवाइजर,

श्याम यूनिवर्सिटी, दौसा (राज)

सार

गीतांजलि श्री, हिंदी साहित्य की एक ऐसी सशक्त हस्ताक्षर हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आधुनिक स्त्री की जटिलताओं, संघर्षों, आकांक्षाओं और उसकी पहचान की खोज को बड़ी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। उनके साहित्य में स्त्री केवल एक पात्र नहीं, बल्कि एक जीवंत इकाई है जो पितृसत्तात्मक समाज की रूढ़ियों को चुनौती देती है, अपने अस्तित्व को पहचानती है और मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर होती है। गीतांजलि श्री की स्त्रियों में एक अंतर्द्वंद्व साफ झलकता है। वे एक तरफ परंपराओं और संस्कारों की बेड़ियों में जकड़ी हुई दिखती हैं, तो दूसरी तरफ उन बेड़ियों को तोड़ने की छटपटाहट भी उनमें निहित होती है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'माई' इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। 'माई' उपन्यास में माई एक ऐसी स्त्री है जो अपने परिवार के लिए अपनी अस्मिता और पहचान को विसर्जित कर देती है। वह घर के सारे काम चुपचाप करती है, परिवार को सहेजती है, लेकिन उसकी अपनी इच्छाओं और भावनाओं से किसी को सरोकार नहीं होता। वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पिसती हुई दिखाई देती है। लेकिन इसी उपन्यास में 'सुनैना' नई पीढ़ी की आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो अपनी मां को इस घुटन भरे जीवन से बाहर निकालने का प्रयास करती है। यह द्वंद्व ही गीतांजलि श्री के स्त्री पात्रों को यथार्थवादी बनाता है। गीतांजलि श्री यह दर्शाती हैं कि आधुनिक स्त्री केवल विद्रोह नहीं करती, बल्कि वह अपनी चेतना को जगाती है। वह समझती है कि जब तक वह स्वयं अपनी क्षमताओं को नहीं पहचानेगी, तब तक उसे कोई भी रूढ़िवादी परंपरा से बाहर नहीं निकाल सकता। उनकी स्त्रियाँ अपनी स्वयं की

परम्परावादी सोच को भी चुनौती देती हैं, जो उन्हें गुलाम बनाए रखती है। वे अपनी आवाज उठाने में सक्षम हैं, भले ही समाज में अभी भी स्त्रियों के भीतर चेतना और जागृति की कमी देखी जा सकती है।

मुख्य शब्द

साहित्य, आधुनिक, स्त्री, शोषण

भूमिका

गीतांजलि श्री के साहित्य में स्त्री केवल घरेलू दायरे तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज की गलत मान्यताओं, रुढ़ियों और परंपराओं को भी चुनौती देती है। गीतांजलि श्री स्त्री के प्रति बनी-बनाई हर उस धारणा के विरुद्ध हैं जो स्त्री के खिलाफ जाती है। उनके उपन्यासों में स्त्री अपने स्वतंत्र अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सचेत दिखाई देती है। 'रेत समाधि' की अम्मा भी इसी क्रम में एक विशिष्ट स्थान रखती हैं, जो अपने पति की मृत्यु के बाद गहरे अवसाद से निकलकर एक नई पहचान और स्वतंत्रता की ओर बढ़ती हैं। यह दर्शाती हैं कि उम्र या सामाजिक भूमिकाएं स्त्री की आकांक्षाओं और संभावनाओं को सीमित नहीं कर सकतीं।

गीतांजलि श्री का साहित्य स्त्री के यौन शोषण, वेश्यावृत्ति जैसी समस्याओं पर भी व्यंग्यात्मक प्रहार करता है। वे दर्शाती हैं कि कैसे समाज के कुछ ठेकेदार नारी को ऐसे कार्यों में धकेल देते हैं जिससे वह चाहकर भी बाहर नहीं निकल सकती। साथ ही, वे स्त्री के त्याग और उसकी निःस्वार्थ सेवा को भी रेखांकित करती हैं, लेकिन इसके साथ ही यह प्रश्न भी उठाती हैं कि क्या यह त्याग उसकी पहचान को मिटा तो नहीं रहा है।

गीतांजलि श्री का बुकर पुरस्कार विजेता उपन्यास 'रेत समाधि' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि आधुनिक स्त्री के बहुआयामी और जटिल अस्तित्व का एक गहन अन्वेषण है। यह उपन्यास पितृसत्तात्मक समाज की रूढ़ियों को तोड़ते हुए, स्त्री के भीतर के द्वंद्वों, उसकी आकांक्षाओं, उसकी मुक्ति की चाह और उसके पुनर्जागरण को अत्यंत संवेदनशीलता और

कलात्मकता से चित्रित करता है। उपन्यास की मुख्य नायिका, अम्मा, अपनी उम्र के आठवें दशक में एक ऐसी यात्रा पर निकलती हैं जो आधुनिक स्त्री की पहचान, स्वतंत्रता और आत्म-खोज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती है।

‘रेत समाधि’ में आधुनिक स्त्री का चित्रण किसी एक खॉंचे में नहीं समाता। अम्मा, जो शुरू में एक पारंपरिक भारतीय गृहिणी के रूप में दिखाई देती हैं, अचानक अपने अतीत, विशेषकर विभाजन के दर्द और उससे जुड़े अनसुलझे रहस्यों को खंगालने की दिशा में अग्रसर होती हैं। यह यात्रा प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक स्त्री के उस प्रयास को दर्शाती है, जहाँ वह केवल वर्तमान में जीने के बजाय अपने इतिहास से भी संवाद स्थापित करती है, ताकि वह अपनी पूर्ण पहचान को समझ सके। अम्मा का पाकिस्तान जाने का निर्णय, जो कि उनके लिए एक वर्जित क्षेत्र रहा है, उन्हें न केवल भौगोलिक सीमाओं से परे ले जाता है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक सीमाओं को भी तोड़ता है। यह आधुनिक स्त्री की उस अदम्य भावना का प्रतीक है जो अपने भीतर दबी इच्छाओं और अनकहे सपनों को पूरा करने के लिए किसी भी बाधा को पार करने को तैयार है।

‘रेत समाधि’ उपन्यास में चित्रित अन्य महिला पात्र भी आधुनिक स्त्री के विभिन्न रंगों को दर्शाते हैं। अम्मा की बेटी, ‘बिटीया’, जो कि एक शहरी, स्वतंत्र विचार वाली महिला है, अपनी माँ की इस अप्रत्याशित यात्रा को समझने और उसका समर्थन करने का प्रयास करती है। वह आधुनिक पीढ़ी की उस स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो अपनी जड़ों से जुड़ी रहती है, लेकिन साथ ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता को भी महत्व देती है। बिटीया का अपनी माँ के साथ का रिश्ता न केवल मातृत्व के पारंपरिक बंधनों को दर्शाता है, बल्कि एक सहेली और हमदर्द के रूप में उनके आधुनिक संबंध को भी उजागर करता है।

‘रेत समाधि’ उपन्यास में ट्रांसजेंडर चरित्र रोजी बाई का समावेश आधुनिक स्त्रीत्व की परिभाषा को और विस्तृत करता है। रोजी बाई का चरित्र समाज द्वारा निर्धारित लिंग पहचान की कठोर सीमाओं को चुनौती देता है। वह अपनी शर्तों पर जीवन व्यतीत करती है, प्रेम करती है और मानवीय संबंधों की नई व्याख्याएँ प्रस्तुत करती है। यह चित्रण दर्शाता है कि आधुनिक

स्त्रीत्व केवल जैविक लिंग तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें पहचान की तरलता, आत्म-स्वीकृति और सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का साहस भी शामिल है। रोजी बाई का चरित्र हाशिए पर पड़े लोगों की आवाज़ बनता है और यह संदेश देता है कि आधुनिक स्त्री मुक्ति की अवधारणा में सभी लिंगों और पहचानों को समाहित किया जाना चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

'रेत समाधि' में स्त्री का शरीर और उसकी इच्छाएँ भी एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरते हैं। अम्मा का अपने बुढ़ापे में भी यौन इच्छाओं और भावनाओं का अनुभव करना, और उन्हें व्यक्त करने की स्वतंत्रता, भारतीय समाज में अक्सर वर्जित माने जाने वाले विषयों को चुनौती देती है। [1]

'रेत समाधि' आधुनिक स्त्री की उस यथार्थवादी तस्वीर को प्रस्तुत करता है जहाँ उम्र या सामाजिक अपेक्षाएँ उसकी मानवीय इच्छाओं को सीमित नहीं कर सकतीं। यह चित्रण स्त्री को केवल एक माँ, पत्नी या बेटी के रूप में देखने के बजाय, एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है जिसकी अपनी इच्छाएँ, कल्पनाएँ और भावनाएँ होती हैं। [2]

भाषा और शैली के स्तर पर भी गीतांजलि श्री आधुनिक स्त्री के चित्रण को नया आयाम देती हैं। उनकी भाषा चंचल, प्रवाहमयी और कभी-कभी तो बेबाक भी है, जो स्त्री के आंतरिक जगत की जटिलताओं को खूबसूरती से पकड़ती है। रूपकों और प्रतीकों का प्रयोग स्त्री के अनुभवों को एक सार्वभौमिक अपील देता है। [3]

'रेत समाधि' स्वयं एक रूपक है - अतीत की रेत में दबी स्मृतियाँ और पहचान, जिन्हें खोदकर फिर से जीवित किया जाता है। यह प्रक्रिया आधुनिक स्त्री की अपने भीतर की परतों को उधेड़ने और स्वयं को नए सिरे से परिभाषित करने की यात्रा को दर्शाती है। [4]

गीतांजलि श्री के साहित्य में आधुनिक स्त्री का चित्रण

गीतांजलि श्री के उपन्यास 'हमारा शहर उस बरस' में, जहाँ एक ओर सांप्रदायिक दंगों और सामाजिक उथल-पुथल का

गहरा चित्रण है, वहीं दूसरी ओर आधुनिक स्त्री की जटिलताओं, संघर्षों और उसकी बदलती भूमिका को भी सूक्ष्मता से उभारा गया है। यह उपन्यास केवल बाहरी घटनाओं का बयान नहीं करता, बल्कि व्यक्ति के, विशेषकर स्त्री के, आंतरिक द्वंद्वों और सामाजिक दबावों को भी परत-दर-परत खोलता है।

आधुनिक स्त्री का चित्रण उपन्यास में कई आयामों से होता है। सबसे पहले, वह परंपरागत रूढ़ियों और सामंती मानसिकता से ग्रस्त समाज में अपनी जगह बनाने का प्रयास करती है। उपन्यास में स्त्रियाँ अक्सर उन बंधनों में जकड़ी हुई दिखाई देती हैं, जहाँ उनकी इच्छाओं और आकांक्षाओं को 'निर्लज्जता' का पर्याय मान लिया जाता है। लेकिन इसके बावजूद, उनमें एक सुप्त चेतना और विद्रोह की भावना पनपती है। वे समाज द्वारा निर्धारित "आदर्श स्त्री" की छवि को चुनौती देना चाहती हैं, उन मान्यताओं के विरुद्ध खड़ी होना चाहती हैं जो उनके अस्तित्व और स्वतंत्रता को बाधित करती हैं।

'हमारा शहर उस बरस' उपन्यास में आधुनिक स्त्री आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर भी कदम बढ़ाती दिखती है। वह केवल घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि शिक्षा और व्यवसाय के माध्यम से समाज में अपना स्थान बनाना चाहती है। यह आर्थिक स्वावलंबन उसे निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करता है, हालांकि यह सफर चुनौतियों से भरा होता है। उसे अक्सर दोहरे कार्यभार और पुरुष-सत्तात्मक समाज के प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है।

गीतांजलि श्री की आधुनिक स्त्री केवल बाहरी दुनिया से ही नहीं, बल्कि अपनी ही खाल के नीचे छिड़े दंगे से भी जूझती है। यह आंतरिक द्वंद्व उसके अस्तित्व की पहचान से जुड़ा है। वह जानना चाहती है कि वह कौन है, उसके भीतर क्या छिपा है। यह आत्म-अन्वेषण उसे समाज की थोपी हुई पहचान से मुक्ति दिलाता है और उसे अपनी अस्मिता को पहचानने की ओर ले जाता है। उपन्यास में स्त्री के भीतर की यह बेचैनी उसे अपने शहर, अपने समाज को समझने और उसके प्रवाहों को मोड़ने की प्रेरणा देती है।

'हमारा शहर उस बरस' उपन्यास में आधुनिक स्त्री के प्रेम और संबंधों को लेकर भी नए दृष्टिकोण दिखाई देते हैं। वह केवल विवाह जैसी सामाजिक संस्थाओं के बंधन में नहीं रहना चाहती, बल्कि भावनात्मक और आत्मिक संबंधों की तलाश

करती है। वह अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए पारंपरिक वर्जनाओं को तोड़ने का साहस करती है, भले ही इसके लिए उसे सामाजिक तिरस्कार या आलोचना का सामना करना पड़े।

'हमारा शहर उस बरस' में गीतांजलि श्री आधुनिक स्त्री को केवल एक पात्र के रूप में चित्रित नहीं करतीं, बल्कि उसे एक ऐसे प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती हैं जो सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तर पर लगातार संघर्षरत है। यह स्त्री पूर्णतः स्वतंत्र नहीं है, लेकिन वह स्वतंत्रता की तलाश में है। उसमें अपनी चेतना जगाने, अपने अस्तित्व को पहचानने और पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे मानदंडों को चुनौती देने का अदम्य साहस है। गीतांजलि श्री का यह चित्रण आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री की जटिल और बहुआयामी स्थिति को दर्शाता है, जहाँ वह परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का काम करती हुई अपने लिए एक नई राह तलाश रही है।

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'माई' भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति और उसकी आंतरिक दुनिया का एक मार्मिक और बहुआयामी चित्रण प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास केवल एक माँ की कहानी नहीं है, बल्कि यह पारंपरिक भारतीय परिवार के ताने-बाने में फँसी आधुनिक स्त्री की जटिलताओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को भी बखूबी सामने लाता है। 'माई' में आधुनिक स्त्री का चित्रण कई परतों में उभरता है, जो उसकी व्यक्तिगत पहचान, सामाजिक भूमिका और आंतरिक चेतना के बीच के द्वंद्व को दर्शाता है।

'माई' उपन्यास की केंद्रीय पात्र 'माई' स्वयं एक पारंपरिक स्त्री हैं, जो परिवार की धुरी हैं और त्याग व ममता की प्रतिमूर्ति मानी जाती हैं। लेकिन उपन्यास उनकी चुप्पी, उनकी दबी हुई इच्छाओं और उनके अव्यक्त विद्रोह को भी रेखांकित करता है। यह दिखाता है कि कैसे एक पारंपरिक आवरण के भीतर भी एक स्त्री अपनी पहचान और स्वतंत्रता के लिए जूझ सकती है। 'माई' की बेटियाँ, विशेषकर बेटी, आधुनिक स्त्री का एक और आयाम प्रस्तुत करती हैं। वे शिक्षित हैं, आत्मनिर्भर हैं और समाज के बदलते मूल्यों को आत्मसात कर रही हैं। उनके माध्यम से गीतांजलि श्री उन युवा स्त्रियों के अनुभवों को दर्शाती हैं जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं। वे अपनी माँ की तरह चुपचाप

सब कुछ सहने वाली नहीं हैं, बल्कि वे अपने विचारों को व्यक्त करने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने का साहस रखती हैं।

'माई' में आधुनिक स्त्री का चित्रण केवल व्यक्तिगत संघर्षों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पितृसत्तात्मक समाज के संरचनात्मक पहलुओं पर भी प्रकाश डालता है। उपन्यास दिखाता है कि कैसे पारिवारिक अपेक्षाएँ, सामाजिक मानदंड और लैंगिक भूमिकाएँ स्त्रियों के जीवन को आकार देती हैं। आधुनिक स्त्री इन बंधनों को चुनौती देती है, लेकिन अक्सर उसे इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। उसे अपने सपनों को छोड़ना पड़ता है, अपने व्यक्तिगत स्वतंत्रता का त्याग करना पड़ता है, या फिर उसे समाज द्वारा "विद्रोही" के रूप में देखा जाता है।

'माई' उपन्यास स्त्री संबंधों की जटिलता को भी दर्शाता है। माँ-बेटी का रिश्ता, बहनों का बंधन, और अन्य महिला पात्रों के माध्यम से स्त्री एक-दूसरे का सहारा बनती हैं, एक-दूसरे को समझती हैं और एक-दूसरे के अनुभवों को साझा करती हैं। यह दिखाता है कि कैसे स्त्रियाँ आपस में एक समर्थन प्रणाली बनाती हैं, जो उन्हें पितृसत्तात्मक ढांचे में भी अपनी जगह बनाने में मदद करती है।

गीतांजलि श्री का 'माई' आधुनिक स्त्री का एक सूक्ष्म और यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करता है। यह दिखाता है कि आधुनिक स्त्री केवल पश्चिमी विचारों की नकल करने वाली नहीं है, बल्कि वह भारतीय समाज के भीतर ही अपनी पहचान, अपनी आवाज़ और अपने स्थान के लिए संघर्ष कर रही है। यह उपन्यास स्त्री की आंतरिक शक्ति, उसके लचीलेपन और उसके अनवरत संघर्ष की कहानी है, जो उसे अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठने और अपने अस्तित्व को सार्थक बनाने के लिए प्रेरित करती है।

गीतांजलि श्री की 'रेत समाधि' आधुनिक स्त्री का एक सशक्त, संवेदनशील और बहुआयामी चित्रण प्रस्तुत करती है। यह स्त्री को केवल एक पारंपरिक ढांचे में नहीं देखती, बल्कि उसे एक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, आत्म-खोज में लीन और अपनी शर्तों पर जीवन जीने वाली इकाई के रूप में प्रस्तुत करती है। उपन्यास यह संदेश देता है कि आधुनिक स्त्री अपनी पहचान

के लिए संघर्ष करती है, अपने अतीत से सीखती है, वर्तमान में जीती है और भविष्य की ओर बढ़ती है, अपनी सभी सीमाओं को तोड़ते हुए और अपनी पूर्णता को प्राप्त करते हुए। यह केवल एक व्यक्तिगत कहानी नहीं है, बल्कि सामूहिक रूप से आधुनिक स्त्री की मुक्ति और पुनर्जागरण की गाथा है।

गीतांजलि श्री समकालीन हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण आवाज़ हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में आधुनिक स्त्री के जटिल और बहुआयामी चित्रण को प्रस्तुत किया है। उनके लेखन में स्त्री न केवल पितृसत्तात्मक समाज की चुनौतियों से जूझती है, बल्कि अपनी पहचान, स्वतंत्रता और आत्म-बोध की यात्रा भी करती है। 'तिरोहित' उपन्यास विशेष रूप से इस यात्रा का एक मार्मिक और सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

'तिरोहित' उपन्यास में गीतांजलि श्री स्त्री जीवन की आकांक्षा और वास्तविकता के द्वंद्व को दर्शाती हैं। यह उपन्यास स्त्री के भीतर के संघर्ष, उसकी खुशी और यातनाओं को अभिव्यक्त करता है। इस उपन्यास में स्त्री पात्र पारंपरिक बंधनों और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच अपनी जगह तलाश करती दिखती हैं। वे केवल निष्क्रिय भोगी नहीं हैं, बल्कि उनके भीतर एक सुप्त चेतना है जो समय-समय पर विद्रोह का स्वर उठाती है।

गीतांजलि श्री की स्त्रियाँ समाज द्वारा गढ़ी गई उन तमाम धारणाओं के विरुद्ध खड़ी होती हैं जो स्त्री के खिलाफ जाती हैं। वे अपने स्वतंत्र अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सचेत हैं। 'तिरोहित' की स्त्री पात्र भी इसी चेतना से ओत-प्रोत हैं। वे सिर्फ घर-परिवार की सीमा में सिमटी रहने वाली नहीं हैं, बल्कि अपनी क्षमताओं और इच्छाओं को पहचानना चाहती हैं। आधुनिक स्त्री का चित्रण केवल बाहरी संघर्षों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उसके आंतरिक जगत के अंतर्द्वंद्वों को भी उजागर करता है। वे समाज की अपेक्षाओं और अपनी निजी आकांक्षाओं के बीच फंसी हुई हैं। यह द्वंद्व उन्हें कभी-कभी टूटने, बिखरने और 'तिरोहित' होने की स्थिति तक ले जाता है।

गीतांजलि श्री के पात्र भावनात्मक और मानसिक स्वायत्तता की ओर बढ़ते दिखते हैं। वे केवल पुरुषों पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि अपने निर्णय स्वयं लेना चाहती हैं और अपने जीवन की दिशा स्वयं तय करना चाहती हैं। हालांकि, यह यात्रा आसान

नहीं होती और उन्हें कई अवरोधों का सामना करना पड़ता है।

'तिरोहित' सहित उनके अन्य उपन्यास जैसे 'माई' में पारिवारिक संबंधों में स्त्री की स्थिति पर गहरा चिंतन मिलता है। जहाँ 'माई' में माँ पारंपरिक भारतीय स्त्री की छवि है जो परिवार के लिए अपनी पहचान विसर्जित कर देती है, वहीं 'तिरोहित' और 'रेत समाधि' की स्त्रियाँ धीरे-धीरे इस जड़ता को तोड़ती हैं। वे अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ी को भी अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

गीतांजलि श्री अपने पात्रों के माध्यम से यह संदेश देती हैं कि जब तक स्त्री स्वयं अपनी चेतना को नहीं जगाती, अपने अस्तित्व को नहीं पहचानती, तब तक उसे कोई भी रूढ़िवादी परंपरा से बाहर नहीं निकाल सकता। 'तिरोहित' में यह आत्म-बोध की प्रक्रिया धीरे-धीरे विकसित होती है, जहाँ पात्र अपने 'तिरोहित' होने का कारण खोजते हैं और उससे बाहर निकलने का रास्ता भी।

गीतांजलि श्री का उपन्यास 'तिरोहित' आधुनिक स्त्री के चित्रण में एक मील का पत्थर है। वे स्त्री की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए भी, उसके भीतर की अदम्य जिजीविषा और आत्म-खोज की यात्रा को दर्शाती हैं। उनके पात्र सिर्फ पीड़ा सहने वाले नहीं हैं, बल्कि अपने अनुभवों से सीखते हुए और अपनी पहचान बनाने की दिशा में अग्रसर होते हैं। इस प्रकार, 'तिरोहित' आधुनिक स्त्री के संघर्षों, आकांक्षाओं और उसके 'तिरोहित' होकर भी अपने अस्तित्व की खोज की एक सशक्त गाथा है। गीतांजलि श्री का लेखन इस बात का प्रमाण है कि आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श कितनी गहराई और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त हो रहा है।

गीतांजलि श्री की आधुनिक स्त्री पारंपरिक बेड़ियों को तोड़कर स्वयं को अभिव्यक्त करने का साहस रखती है। वह सिर्फ चुपचाप सब कुछ सहती नहीं, बल्कि अपनी बात रखने में सक्षम है, भले ही इसके लिए उसे समाज से टकराव मोल लेना पड़े। 'खाली जगह' में स्त्री पात्रों के माध्यम से लेखिका दिखाती हैं कि कैसे स्त्री अपने अस्तित्व को पहचान कर रूढ़िवादी परंपराओं से बाहर आने का प्रयास करती है। वे यह भी इंगित करती हैं कि जब तक स्त्री स्वयं अपनी चेतना को नहीं

जगाती, तब तक उसे कोई भी बंधन से मुक्त नहीं कर सकता।

'खाली जगह' में आधुनिक स्त्री की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसकी आत्म-खोज की यात्रा है। वह केवल बाहरी दुनिया से नहीं, बल्कि अपने भीतर के खालीपन और रिक्तता से भी जूझती है। यह खालीपन सामाजिक अपेक्षाओं, अतृप्त इच्छाओं और स्वयं की पहचान के अभाव से उपजा हो सकता है। उपन्यास में स्त्री पात्र इस खालीपन को भरने के लिए विभिन्न रास्तों पर चलती हैं, कभी विद्रोह करती हैं, कभी संबंधों में अर्थ खोजती हैं, और कभी अपने स्वतंत्र अस्तित्व की दिशा में कदम बढ़ाती हैं। यह चित्रण दर्शाता है कि आधुनिक स्त्री केवल सामाजिक बंधनों से मुक्ति नहीं चाहती, बल्कि एक पूर्ण और सार्थक जीवन जीने की भी आकांक्षा रखती है।

गीतांजलि श्री के उपन्यासों में आधुनिक स्त्री का चित्रण इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि किस प्रकार वह समाज द्वारा बनाए गए दोहरे मापदंडों को चुनौती देती है। वह स्त्री के प्रति बनी-बनाई हर उस धारणा के विरुद्ध खड़ी होती है जो उसकी स्वतंत्रता और गरिमा के खिलाफ जाती है। चाहे वह "माई" उपन्यास में माई का धीरे-धीरे अपनी पराधीनता के विरुद्ध प्रतिरोध विकसित करना हो या "रेत समाधि" में दीदी की स्वतंत्रता की यात्रा, गीतांजलि श्री की स्त्रियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सचेत दिखाई देती हैं। 'खाली जगह' में भी यह चेतना विभिन्न रूपों में प्रकट होती है, जहाँ स्त्री अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहती है और अपनी नियति को खुद गढ़ने का प्रयास करती है।

गीतांजलि श्री यह भी दर्शाती हैं कि आधुनिकता की ओर बढ़ते हुए भी भारतीय स्त्री को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पितृसत्तात्मक समाज की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वह चाहकर भी पूरी तरह उनसे मुक्त नहीं हो पाती। 'खाली जगह' में भी यह द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ स्त्री स्वतंत्रता की ओर बढ़ती है, लेकिन अतीत की स्मृतियाँ और सामाजिक संस्कार उसे पूरी तरह से स्वतंत्र होने से रोकते हैं। यह चित्रण भारतीय समाज की वास्तविकता को दर्शाता है, जहाँ आधुनिकता और परंपरा का संगम एक जटिल स्थिति उत्पन्न करता है।

गीतांजलि श्री ने अपने उपन्यास 'खाली जगह' में आधुनिक स्त्री का एक मार्मिक और यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया है।

यह स्त्री सिर्फ एक पीड़ित या दबी-कुचली इकाई नहीं, बल्कि एक ऐसी शख्सियत है जो अपनी पहचान, स्वतंत्रता और आत्म-पूर्ति के लिए प्रयासरत है। वे दिखाती हैं कि आधुनिक स्त्री की यात्रा केवल बाहरी संघर्षों तक सीमित नहीं, बल्कि उसके भीतर के खालीपन और आत्म-खोज की गहन यात्रा भी है। इस प्रकार, गीतांजलि श्री का साहित्य आधुनिक भारतीय स्त्री के जटिल मानस, उसके संघर्षों और उसकी आकांक्षाओं को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

निष्कर्ष

गीतांजलि श्री के साहित्य में आधुनिक स्त्री का चित्रण बहुआयामी और सूक्ष्म है। उनकी स्त्रियाँ दमित, पीड़ित होने के बावजूद हार नहीं मानतीं, बल्कि अपने जीवन के संघर्षों से जूझती हैं। वे अपनी चेतना को जागृत करती हैं, अपनी क्षमताओं को पहचानती हैं और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के समक्ष अपने स्वतंत्र अस्तित्व का उद्घोष करती हैं। उनका लेखन स्त्री विमर्श को एक नई दिशा देता है, जहाँ स्त्री केवल मुक्ति की आकांक्षा नहीं करती, बल्कि उसे प्राप्त करने के लिए सक्रिय रूप से संघर्ष भी करती है। गीतांजलि श्री की कलम से निकली ये स्त्रियाँ केवल काल्पनिक पात्र नहीं, बल्कि समाज में उपस्थित हर उस स्त्री का प्रतिबिम्ब हैं जो अपनी पहचान और स्वतंत्रता के लिए जूझ रही है।

संदर्भ

- वेंडी डोनिगर और ब्रायन के. स्मिथ; मनु के नियम, 2021, पेंगुइन चालिक्स,
- वीआर मेहता; भारतीय साहित्य विचार की नींव: एक व्याख्या (2018) मनोहर प्रकाशन
- कुमुद रंजन सिंह; साहित्य विज्ञान - अरिहंत प्रकाशन मनु स्मृति
- डॉ. एसआर मायनेनी, राजनीति साहित्य पुनर्मुद्रण: 2020
- यू.एन. घोषाल; साहित्य का इतिहास, 2020